आधुनिक परिप्रेक्ष्य में महात्मा गाँधी के शिक्षा दर्शन की प्रासंगिकता

मुक्ता कुमारी

गांधीजी की शिक्षा–व्यवस्था का दार्शनिक आधार उनके समाज–दर्शन की बुनियाद में खोजा जा सकता है। यह बुनियाद 'प्रेम, सहयोग तथा न्याय' के आधार पर एक नई सामाजिक–व्यवस्था के विकास के स्वप्न पर टिकी है। इस 'नई सामाजिक–व्यवस्था' का आधार है– "सबका कल्याण, सबका उदय।" इसके लिए वे 'नैतिक नियमों' का पालन अनिवार्य मानते हैं। वे कहते हैं–"नैतिक नियमों के पालन में ही मनुष्य–जाति का कल्याण है।" पारस्परिक भावना–स्नेह एवं सहानुभूति को वे इसका आधार मानते हैं। इस संपूर्ण भावना के पीछे 'समानता' का भाव छिपा है। प्रत्येक मानव की 'स्वतंत्रता' का अहसास छिपा है। मधु लिमये गांधी जी की इस विशिष्टता को उनकी 'मानव–स्वभाव की अच्छी परख' के रूप में लेते हुए मानते हैं कि 'गांधी जी मानव स्वभाव को अच्छी तरह समझते थे। उनकी धारणा थी कि सहानुभूति और सहानुकम्पा से कोई इंसान अछूता नहीं है।"